वेध गीत - कल्याण २०१४

आँखोमें नमीं, ना नजरमें चमक,
सर क्यूं है रे झुका झुका
आँगनमें किरणोंका उत्सव
अंदर तू क्यूं रुका रुका ।।धृ।।
सुबह हो गयी, खुला आसमाँ
क्यूं दोहराए जलवा-सदमा
साँसोमें भर शक्ती-ताजगी
अब न रहो तुम रुखा-सुखा ।।१।।
मनमें है जब उचित भावना
सरल बनाती पढना-लिखना
विकासकी हर राह पुकारे
खुदको मत रख ढका-ढका ।।२।।
आओ बनाए नया कारवाँ
हमभी रचाए अपनी दुनीया
सज रहा सपनोंका ये मेला
फेक दे रंग ये फिका-फिका ।।३।।
आँखोमें हँसी और नजरमें चमक
माथेंपें मंगल टिका-टिका
आँगनमे किरनोंका उत्सव
नाचें डमडम डिका-डिका ।।धृ।।